इकाई 9 क्रांतिकारी*

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्तियाँ

- 9.2.1 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्तियों के कारण
- 9.2.2 आरंभिक गतिविधियाँ
- 9.2.3 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्ति का ह्रास

9.3 गदर आंदोलन

- 9.3.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि
- 9.3.2 आरंभिक गतिविधियाँ
- 9.3.3 संगठन की ओर
- 9.3.4 योजना एवं कार्यवाही

9.4 गदर आंदोलन : मुख्य घटनाएँ

9.5 उपलब्धियाँ एवं असफलताएँ

9.6 हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएसन (एच.आर.ए.)

9.7 हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.एस.आर.ए.)

9.8 उत्तर भारत के क्रांतिकारियों का वैचारिक विकास

- 9.8.1 हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.आर.ए.)
- 9.8.2 भगत सिंह और एच. एस. आर. ए.

9.9 बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवादी

9.10 चिटगाँव शस्त्रागार पर छापा

9.11 क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन का ह्रास

9.12 सारांश

9.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

बीसवीं शताब्दी के शुरू में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नया पहलू जुड़ा। क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का राजनैतिक हथियार के रूप में उदय हुआ। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उन कारणों को पहचान पायेंगे जिन्होंने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उभरने में सहायता दी;
- क्रांतिकारियों की प्रारंभिक गतिविधियों तथा उनके पतन के कारणों के बारे में जान पायेंगे;

* यह इकाई ई.एच.आई.-01 की इकाई 15 और इकाई 24 पर आधारित है।

- क्रांतिकारी संगठनों के उद्देश्य और विचारधाराओं का वर्णन कर सकेंगे;
- यह विश्लेषण कर सकेंगे कि क्रांतिकारी संगठनों का वैचारिक रूपान्तरण कैसे हुआ;
- क्रांतिकारियों की योजना को समझ सकेंगे और उसका विवरण दे सकेंगे;
- क्रांतिकारियों की उपलब्धियों की विवेचना कर सकेंगे; और
- राष्ट्रीय आन्दोलन में उनके योगदान के बारे में समझेंगे।

9.1 प्रस्तावना

1907 तक पहला देशव्यापी जन-आंदोलन-स्वदेशी आंदोलन-लगभग समाप्त हो गया था, दूसरा मुख्य प्रयास प्रथम विश्व युद्ध के बाद हुआ। बीच के वर्षों में, राष्ट्रीय आंदोलन की राजनैतिक गतिविधियों में तीन प्रयोग हुए, जिनमें से प्रत्येक ने राष्ट्रीय चेतना जगाने और उसे बढ़ाने में अपने-अपने तरीके से योगदान दिया। पहला प्रयोग था, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का जिसका उदय स्वदेशी आंदोलन के पतन के साथ हुआ तथा गदर पार्टी तथा प्रथम विश्व युद्ध के वर्षों में हुए क्रांतिकारी आन्दोलन।

बाद के वर्षों में, 1922 के पश्चात क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की दो प्रमुख धाराएँ विकसित हुईं। क्रांतिकारी मुख्य रूप से दो क्षेत्रों में सक्रिय थे – पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश (पुराने केन्द्रीय प्रान्तों), और बंगाल।

असहयोग-आन्दोलन के स्थगित हो जाने के बाद गांधी जी के नेतृत्व और उनके अहिंसात्मक संघर्ष की नीति के प्रति असंतोष के कारण क्रांतिकारी आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला। स्वतंत्रता के आदर्श ने क्रांतिकारियों को उत्तेजना और शोषण से मुक्त नए समाज के निर्माण की भावना की ओर प्रोत्साहित किया। इस इकाई में हम इन सारे मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

9.2 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्तियाँ

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद राजनैतिक गतिविधि का एक ऐसा रूप था, जिसे राष्ट्रीय युवा वर्ग की अत्यधिक प्रेरित पीढ़ी ने अपनाया था। इस वर्ग को प्रचलित राजनैतिक गतिविधियों में अपनी रचनात्मक शक्तियों को व्यक्त करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला था।

9.2.1 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्तियों के कारण

गरम दल द्वारा नरम दल की राजनीति की आलोचना ने उन्हें इस बात का विश्वास दिला दिया था कि प्रार्थना तथा तर्कों द्वारा ब्रिटिश शासकों को परिवर्तित करने का प्रयास बेकार था। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन में इस आशा और विश्वास से सक्रिय रूप से भाग लिया था कि आंदोलन के उग्र तरीकों जैसे बहिष्कार, सत्याग्रह आदि द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को उसके विशिष्ट खाँचे से बाहर निकाला जा सकेगा, उन्हें आशा थी कि इस आंदोलन द्वारा ब्रिटिश सरकार को घुटने टेकने पर मजबूर किया जा सकेगा। स्वदेशी आंदोलन जनता के बहुत बड़े हिस्से को लामबन्द करने में केवल आंशिक रूप से ही सफल हो सका और न ही व बंगाल के विभाजन को वापिस करवा सका। यह असफलता लगभग निश्चित ही थी क्योंकि इसके द्वारा जनमानस को लामबन्द करने का यह पहला प्रयास था और दूसरे इनके तरीके इनकी वकालत करने वालों और इनको मानने से घबराने वालों, दोनों ही के लिए नए और अपरिचित थे। इसलिए अपनाने वाले कुछ हिचकिचाहट से ही उन्हें अपना रहे थे। इसके कारण युवा वर्ग में अशान्ति

तथा निराशा की भावना आ गई। यह वर्ग महसूस करने लगा कि जन-जागृति के लिए शायद कुछ और अधिक नाटकीय करने की आवश्यकता थी।

गरम दल द्वारा आंदोलन की कमियों का विश्लेषण करने या इस गतिरोध में से बाहर निकाल सकने के नये रास्ते सुझाने में असफलता के कारण इस भावना को और भी बल मिला। इसका नेतृत्व करने वाले वर्ग के ही एक हिस्से ने, जिनमें अरबिन्दो घोष भी शामिल थे, इस प्रवृत्ति का समर्थन किया। जो इससे सहमत नहीं थे वे इसकी खुली आलोचना करने के बजाय चुप रहे, शायद यह सोच कर कि इससे सरकार को फायदा होगा।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलने का एक कारण सरकार द्वारा स्वदेशी आंदोलन का क्रूर दमन भी था। उदाहरण के लिए, 27 अप्रैल, 1906 की बरीसाल राजनैतिक कान्फ्रेंस में शरीक शांतिपूर्ण भीड़ पर पुलिस ने अकारण हमला कर दिया जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय अखबार ''युगान्तर'' ने कहा कि ''बल को बल से ही रोका जाना चाहिए''। सूरत में 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल और नरम दल में विभाजन के बाद सरकार की दमन की क्षमता काफी बढ़ गयी क्योंकि गरम दल के दमन से नरम दल सरकार से नाराज नहीं होता। संविधान संशोधन के वायदों के लालच से नरम दल को बहका कर सरकार ने गरम दल पर पूरी तरह हमला बोल दिया, तिलक को 6 साल के लिए बर्मा में निर्वासित कर दिया गया, अरबिन्दो घोष को क्रांतिकारी षड्यंत्र केस में गिरफ़्तार कर लिया गया। इस दौर में राष्ट्रवादी युवा वर्ग की एक पूरी पीढ़ी–विशेषकर बंगाल में :

- दमन के कारण नाराज हो गयी,
- उदार दल के रास्ते की व्यर्थता के बारे में निश्चित रूप से कायल हो गयी,
- अशान्त थी कि गरम दल न तो सरकार से तुरंत कोई रियायतें ही ले पाने में सफल हुआ और न ही जन-समुदाय को पूरी तरह लामबन्द करने में।

यह युवा पीढ़ी इसलिए वैयक्तिक वीरता की कार्यवाहियों या क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की ओर उन्मुख हुई। हालांकि वे मानते थे कि साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए अंततः जनता द्वारा हथियारबन्द बगावत आवश्यक थी, उन्हें इस काम की कठिनाई, विशेषकर सेना की वफादारी को खत्म करने के प्रयत्न में मुश्किलों का भी पूरा अहसास था। इसलिए तुंरत कार्यवाही के लिए उनके सामने एक ही रास्ता था : ब्रिटिश अधिकारियों, विशेषकर जो बदनाम हों, की हत्या। ऐसा इसलिए किया गया :

- कि अधिकारियों में दहशत फैल जाए;
- लोगों की उदासीनता तथा डर दूर हो जाए; तथा
- उनकी राष्ट्रीय चेतना जागृत हो जाए।

9.2.2 आरंभिक गतिविधियाँ

हालांकि 1907-1908 के आस-पास की क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति सही मायने में ताकत बन सकी, परन्तु इससे पहले भी इसके कुछ उदाहरण मिलते हैं :

- 1897 में पूना के चापेकर भाइयों – दामोदर और बालकृष्ण – ने दो ब्रिटिश अफ़सरों की हत्या की थी।
- महाराष्ट्र में 1904 तक वी. डी. सावरकर तथा उनके भाई गणेश ने *मित्रमेला* और *अभिनव* भारत जैसी गुप्त समितियों का संगठन किया।
- 1905 के बाद से ही कई अखबारों तथा लोगों ने इस तरह की राजनैतिक गतिविधियों का समर्थन शुरू कर दिया था। 1907 में, बंगाल के लेफ़्टीनेंट गवर्नर पर कातिलाना हमला किया गया, हालांकि वह असफल हो गया।

लेकिन इस प्रवृत्ति की असली शुरुआत अप्रैल 1908 में मानी जाती है जब खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी द्वारा उस गाड़ी पर बम फेंका गया जिसमें उनके अनुसार, मुज्जफरपुर का बदनाम जिला न्यायधीश किंग्सफोर्ड यात्रा कर रहा था। लेकिन दुर्भाग्यवश उसमें दो अंग्रेज औरतें यात्रा कर रही थीं जिनकी अनजाने में हत्या हो गयी। पकड़े जाने के बदले प्रफुल्ल चाकी ने स्वयं को गोली से मार देना बेहतर समझा लेकिन खुदीराम को गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। सरकार ने इस अवसर को अरबिन्दो घोष और उसके भाई बारिन तथा कई अन्यों को एक षड्यंत्र केस में फँसाने के लिए भी इस्तेमाल किया, जिसमें अरबिन्दो स्वयं तो छूट गए लेकिन उनके भाई सहित अन्य कई लोगों को निर्वासन तथा कठोर कारावास जैसी सजाएँ दी गयीं।

अंग्रेजी सरकार के दमन के फलस्वरूप गुप्त संस्थाएँ बनने लगीं, बहुत-सी हत्याएँ हुई तथा हथियार खरीदने के लिए कई ''स्वदेशी'' डकैतियाँ डाली गई। बंगाल में जो क्रांतिकारियों का केंद्र था, क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन ''अनुशीलन'' और ''युगान्तर'' जैसी संस्थाओं द्वारा किया गया। महाराष्ट्र में पूना, नासिक और बंबई क्रांतिकारियों की गतिविधियों के केंद्र बन गए। मद्रास में ''भारत माता एसोसिएशन'' के वांची अय्यर ने गरम दलीय नेता चिदम्बरम पिल्लई की गिरफ्तारी का विरोध कर रही भीड़ पर गोली चलाने वाले अफसर की हत्या कर दी। लंदन में मदनलाल धींगरा ने इंडिया हाउस के अफसर कर्ज़न वाइली की हत्या कर दी तथा रासबिहारी बोस ने 23 दिसम्बर 1912 को दिल्ली में प्रवेश कर रहे वाइसराय लार्ड हार्डिंग पर कातिलाना हमला किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाल हरदयाल, वी. डी. सावरकर, अजीत सिंह और मैडम कामा ने यूरोप में केंद्र स्थापित किए जहाँ से वे क्रांतिकारी संदेश प्रसारित करते रहे तथा स्वदेश में अपने सहयोगियों की सहायता करते रहे। कुल मिलाकर 1908-1918 के बीच 186 क्रांतिकारी या तो मारे गए या पकड़े गए।

9.2.3 प्रारंभिक क्रांतिकारी प्रवृत्ति का ह्रास

कठोर दमन, क्रूर नियमों और लोकप्रियता के अभाव के कारण प्रारंभिक क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की लहर धीरे-धीरे धीमी पड़ गई। इसमें कोई संदेह नहीं कि वैयक्तिक वीरता के कामों के कारण क्रांतिकारियों को कुछ लोकप्रियता, प्रशंसा और हमदर्दी मिली और खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी जैसे कई क्रांतिकारी लोकप्रसिद्ध हो गए। लेकिन जैसा कि इसकी प्रवृत्ति से ही स्पष्ट था, इस प्रकार की राजनैतिक कार्यवाही का अनुकरण केवल कुछ व्यक्तियों द्वारा ही किया जा सकता था, जन-समुदाय द्वारा नहीं। आम जनता अभी भी ऐसे आंदोलन की प्रतीक्षा में थी जो उनकी कमजोरियों को समझते हुए उनकी शक्ति का उचित उपयोग कर सके।

बोध प्रश्न 1

1) प्रारंभिक काल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले दो मुख्य कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रारंभिक क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों द्वारा की गई तीन मुख्य कार्यवाहियों का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.3 गदर आंदोलन

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया और बहुत से भारतीय राष्ट्रवादियों को लगा कि ब्रिटेन की कठिनाइयों से लाभ उठाने का यह एक अत्यन्त दुर्लभ अवसर था। उन्हें लगता था कि लड़ाई में व्यस्त ब्रिटेन उनकी राष्ट्रीय चुनौती का समुचित उत्तर नहीं दे पाएगा। यह चुनौती दो विभिन्न प्रकार के राष्ट्रवादियों द्वारा दी गई : उत्तरी अमेरिका में रहने वाले गदर क्रांतिकारियों द्वारा और भारत में तिलक और एनी बिसेंट की होम रूल लीग द्वारा। हम पहले गदर आंदोलन की चर्चा करेंगे।

9.3.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि

गदर क्रांतिकारियों में अधिकतर वे पंजाबी प्रवासी थे, जो 1904 के बाद उत्तरी अमरीका के पश्चिमी तट पर जाकर बस गए थे। इनमें अधिकतर कर्ज के बोझ तले दबे, पंजाब के जमीन के लिए इच्छुक किसान थे और इनमें विशेषकर जालंधर और होशियारपुर इलाके के किसान थे। इनमें से बहुत से ब्रिटिश भारतीय फौज में नौकरी कर चुके थे। इससे उनमें प्रवास के लिए आवश्यक विश्वास पैदा हो गया था और उनके पास उसके लिए पर्याप्त साधन भी थे। स्थानीय लोगों के विद्वेषपूर्ण रवैये जिसमें गोरे मजदूरों की यूनियनें भी शामिल थीं, प्रतिबंधक प्रवासी नियमों जिनमें भारत सचिव की मिलीभगत शामिल थी, इन सब ने भारतीय समुदाय को अहसास दिला दिया कि यदि उन्हें अपने विरुद्ध नस्लवादी भेदभाव का मुकाबला करना है तो उन्हें स्वयं को संगठित करना होगा। उदाहरण के लिए, एक भारतीय विद्यार्थी तारक नाथ दास जो उत्तरी अमरीका में भारतीय समुदाय के आरंभिक नेताओं में से थे और जिन्होंने **फ्री हिन्दुस्तान** नामक अखबार भी शुरू किया था, यह अच्छी तरह जान गए थे कि ब्रिटिश सरकार भारतीय मजदूरों की फीजी में तो काम करने को प्रोत्साहित कर रही थी क्योंकि वहाँ के जमींदारों को मजदूरों की आवश्यकता थी लेकिन वह उत्तरी अमरीका में भारतीयों के प्रवास को हतोत्साहित कर रही थी क्योंकि उसे डर था कि वे वहाँ आजादी के वर्तमान विचारों से प्रभावित हो जायेंगे।

9.3.2 आरंभिक गतिविधियाँ

प्रवासी भारतीय समुदाय में राजनैतिक गतिविधि की हलचल 1907 में ही शुरू हो गई जब रामनाथ पुरी नामक एक राजनैतिक प्रवासी ने **सर्कुलर-ए-आजादी** नामक पर्चा छापा जिसमें उसने स्वदेशी आंदोलन की सहायता का वचन दिया था। तारक नाथ दास ने **फ्री हिन्दुस्तान** निकालना शुरू किया और जी. डी. कुमार ने **स्वदेश सेवक** नामक पत्र गुरुमुखी में निकाला जिसमें उसने सामाजिक सुधारों की हिमायत की और हिन्दुस्तानी सिपाहियों को बगावत करने का सुझाव दिया। 1910 तक दास और कुमार ने सियैटल (अमरीका) में युनाइटेड इंडिया हाउस की स्थापना कर ली, जहाँ वे हर

हफ्ते हिन्दुस्तानी मजदूरों के गुटों को भाषण दिया करते थे। उन्होंने खालसा दीवान सोसायटी के साथ भी घनिष्ठ संबंध स्थापित किए, जिसके फलस्वरूप 1913 में लंदन में कोलोनियल सैक्रेट्री और भारत में वायसराय तथा अन्य अफसरों से मिलने के लिए एक शिष्टमंडल भेजने का फैसला किया गया। एक महीना इंतजार करने के बाद भी वे कोलोनियल सैक्रैट्री से मिलने में सफल नहीं हो सके लेकिन पंजाब में वे लेफ़्टीनेंट गर्वनर और वायसराय से मिलने में सफल हो गए। पंजाब में उनकी यात्रा के दौरान पंजाब के विभिन्न शहरों में बहुत-सी जन-सभाएँ आयोजित की गई। जनता तथा अखबारों से बहुत सहायता मिली।

इसी बीच 1913 के शुरू में हाँगकाँग और मलाया प्रदेशों में काम करने वाले एक सिक्ख पुजारी भगवान सिंह कनाडा में वैंकूवर शहर गए और खुलेआम ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिसंक बगावत करने का प्रचार किया। उनके प्रचार का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्हें तीन महीने बाद कनाडा से निकल जाने को कहा गया लेकिन उनके विचारों ने श्रोताओं में नयी चेतना जगा दी थी।

9.3.3 संगठन की ओर

ब्रिटिश भारतीय सरकार के रवैये से हताश होकर, उत्तरी अमरीका के भारतीय समुदाय को लगा कि विदेशों में उनकी घटिया स्थिति का कारण उनका एक गुलाम देश का नागरिक होना है। लगातार राजनैतिक संघर्षों, राष्ट्रीय चेतना और भाईचारे की भावना के फलस्वरूप उत्तरी अमरीका के इस समुदाय को एक केंद्रीय संगठन एवं नेता की आवश्यकता महसूस हुई। यह नेता उन्हें लाला हरदयाल के रूप में मिला। जो 1911 में राजनैतिक प्रवासी के रूप में अमरीका आए थे और स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में तथा अमरीकी बुद्धिजीवियों, गरमपंथियों तथा मजदूरों को अराजकतावादी तथा श्रमिकसंघवादी आंदोलनों के बारे में भाषण दिया करते थे लेकिन जिन्होंने भारतीय प्रवासियों के जीवन में अधिक रुचि नहीं दिखाई थी। दिसम्बर 1912 में दिल्ली में वाइसराय पर बम द्वारा हमले की खबर से उनके व्यवहार में परिवर्तन आया क्योंकि उन्हें लगा कि क्रांतिकारी भावना अभी जीवित थी। उन्होंने भारतीय प्रवासी समुदाय का नेतृत्व संभाल लिया तथा मई 1913 में पोर्टलैंड में **हिन्दी एसोसिएशन** की स्थापना से एक केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता भी पूरी हो गई। बाद में इस संगठन का नाम बदल कर **हिन्दुस्तान गदर पार्टी** रख दिया गया। इसकी पहली मीटिंग में बाबा सोहन सिंह भाकना इसके अध्यक्ष चुने गए और लाला हरदयाल जरनल सेक्रेटरी तथा पंडित काशी राम मरोली इसके कोषाध्यक्ष बने। इस मीटिंग में अन्य लोगों के अलावा भाई परमानन्द तथा हरनाम सिंह ''टुंडीलाट'' ने भी भाग लिया था। 10,000 डालर की रकम भी वहीं जमा कर ली गई और फैसला किया गया कि सैन फ्रांसिस्कों में युगान्तर आश्रम नाम से एक मुख्यालय की स्थापना की जाएगी और गदर नामक एक साप्ताहिक अखबार निकाला जाएगा जो मुफ्त बाँटा जाएगा।

9.3.4 योजना एवं कार्यवाही

राजनैतिक कार्यवाही की योजना लाला हरदयाल द्वारा सुझाई गई थी और इसे हिन्दी ऐसोसिएशन ने स्वीकार किया था, यह योजना इस समझ पर आधारित थी कि ब्रिटिश शासन को केवल हथियारबंद विद्रोह द्वारा ही उखाड़ फेंका जा सकता था और ऐसा करने के लिए आवश्यक था कि बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी भारत जाएँ और यह संदेश जनता तथा हिन्दुस्तानी फौज के सिपाहियों तक पहुँचाएँ। लाला हरदयाल यह भी मानते थे कि अमरीका में मिली आजादी को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, अमरीकियों के विरुद्ध नहीं क्योंकि विदेश में रहने वाले हिन्दुस्तानियों को तब तक बराबरी का दर्जा नहीं मिल सकता था जब तक कि वे अपने ही देश में

स्वतंत्र नहीं हो जाते। इस समझ को स्वीकार करते हुए राष्ट्रवादियों ने एक जबर्दस्त अभियान छेड़ दिया और जिन फैक्ट्रियों और फ़ार्मों पर हिन्दुस्तानी प्रवासी काम करते थे उनका दौरा करने लगे।

पहली नवम्बर 1913 को गदर अखबार की शुरुआत की गई, पहला अंक उर्दू में छपा लेकिन एक महीने बाद उसका गुरुमुखी अंक भी आ गया। गदर अखबार की रूपरेखा राष्ट्रवाद के संदेश को सीधे-सादे लेकिन प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त करने के हिसाब से तैयार की गई थी। उसके नाम का ही अर्थ था विद्रोह ताकि उसकी मंशा के बारे में किसी प्रकार का संदेह न रहे। उसके ऊपर ''अंग्रेजी राज का दुश्मन'' छपा हुआ था। इसके अलावा, हर अंक के मुखपृष्ठ पर ''अंग्रेजी राज का कच्चा चिट्ठा'' छपता था जिसमें अंग्रेजी शासन के 14 नकारात्मक प्रभावों का विवरण रहता था। चिट्ठा वास्तव में अंग्रेजी शासन की समस्त आलोचना का सारांश था जिसमें भारतीय संपत्ति की लूट, जमीन के ऊँचे लगान, प्रति व्यक्ति निम्न आय, लाखों भारतीयों की जान लेने वाले अकाल का बार-बार पड़ना, फौज पर लम्बे-चौड़े खर्च, स्वास्थ्य पर नगण्य खर्च तथा हिन्दू-मुसलमानों को लड़वा कर ''विभाजन और शासन'' की नीति आदि का जिक्र रहता था। चिट्ठे की आखिरी दो बातें इस सबके समाधान की ओर यह कह कर संकेत करती थीं कि करोड़ों भारतीयों के मुकाबले में हिन्दुस्तान में मौजूद अंग्रेजों की संख्या बहुत ही कम थी और 1857 के पहले विद्रोह के बाद छप्पन वर्ष बीत गए थे और एक अन्य विद्रोह के लिए समय आ गया था।

गदर जिसका प्रसार उत्तरी अमरीका के भारतीय प्रवासियों में खूब था, जल्दी ही फिलिपाइन्स, हाँगकाँग, चीन, मलाया प्रदेशों, सिंगापुर, त्रिनिदाद तथा होंडूरस के प्रवासियों तक भी पहुँचने लगा और इन केंन्द्रों में मौजूद हिन्दुस्तानी सेनाओं में भी। इसे भारत भी भेजा जाता था। इसने प्रवासी समुदायों में जबर्दस्त चेतना पैदा की तथा इसे पढ़ने और इसमें उठाए गए मुद्दों पर बहस के लिए कई वर्ग बनाए गए और चन्दे के ढेर लग गए।

9.4 गदर आंदोलन : मुख्य घटनाएँ

1914 में घटी तीन मुख्य घटनाओं ने गदर आंदोलन की आगे की दिशा निर्धारित की, लाला हरदयाल की गिरफ्तारी, जमानत और स्विट्जरलैंड भाग जाना, कामागाटा मारू जहाज़ की यात्रा और प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत।

मार्च 1914 में हरदयाल को गिरफ्तार कर लिया गया। संभवतः इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण था ब्रिटिश सरकार का दबाव जो चाहती थी कि वे गदर आंदोलन के नेतृत्व से हट जाएँ लेकिन जो कारण बताया गया वह था, उनकी अराजकतावादी गतिविधियाँ। उन्हें जमानत पर छोड़ दिय गया और उनकी पार्टी ने फैसला किया कि वह जमानत से भाग कर स्विट्रलैंड चले जाएँ।

इस बीच, कनाडा के प्रवास कानूनों का उल्लंघन करने के लिए, जिनके अनुसार, ''सीधे अपने जहाज पर आने वालों'' के सिवा सभी अन्य के आने पर प्रतिबंध था, सिंगापुर में रह रहे एक हिन्दुस्तानी कांट्रेक्टर गुरदित्त सिंह ने **कामागाटा मारू** नामक जहाज किराए पर लिया और पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के विभिन्न भागों में रहने वाले 376 भारतीय यात्रियों को लेकर वैंकूवर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में गदर पार्टी के कार्यकर्ता जहाज पर आते, भाषण देते तथा साहित्य बाँटते। उनके प्रवास की पूर्व सूचना मिलने पर वैंकूवर के प्रेस ने ''बढ़ते हुए पूर्व के आक्रमण'' की चेतावनी दे दी और अपने कानूनों को और कड़ा करके कनाडा की सरकार इस चुनौती का सामना करने को तैयार हो गई।

कनाडा पहुँचने पर, जहाज को बंदरगाह में जाने नहीं दिया गया तथा पुलिस ने उसकी घेराबंदी कर दी। वैंकूवर में ''समुद्रतट समिति'' जिसके नेता हुसैन रहीम, सोहन लाल पाठक और बलवन्तसिंह थे, के प्रयत्नों के बावजूद तथा अमरीका में बर्कातुल्ला, भगवान सिंह, रामचंद्र और सोहन सिंह भकना के शक्तिशाली अभियान के बावजूद, कामागाटा मारू को कनाडा की जल सीमा के बाहर निकाल दिया गया। उसके जापान पहुँचने से पहले प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया तथा ब्रिटिश सरकार ने ऐलान कर दिया कि जहाज के कलकता पहुँचने से पहले किसी यात्री को उतरने नहीं दिया जाएगा।

वापसी की यात्रा में जिस बन्दरगाह पर भी यह जहाज पहुँचा वहाँ भारतीय प्रवासियों में रोष की लहर दौड़ गई और ब्रिटिश विरोधी भावना बढ़ने लगी। जब जहाज कलकता के पास बज-बज नामक स्थान पर पहुँचा तो पुलिस के द्वैषपूर्ण रवैये के कारण संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में 18 यात्रियों की मृत्यु हो गई, 202 को गिरफ्तार कर लिया गया तथा बाकी भाग निकलने में सफल हो गए।

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण घटना जिसने सारी परिस्थिति में एक नाटकीय परिवर्तन ला दिया वह थी विश्वयुद्ध की शुरुआत। यही वह अवसर था जिसके इंतजार में गदरवादी तैयार बैठे थे ताकि अंग्रेजों की कठिनाइयों का पूरा लाभ उठाया जा सके। यह अवसर उनकी आशाओं से पहले ही आ गया। अभी उनकी तैयारी भी पूरी नहीं हुई थी। फिर भी पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं की विशेष सभा हुई और यह फैसला किया गया कि काम का समय आ गया था। यह विचार किया गया कि दल की सबसे बड़ी कमजोरी हथियारों की कमी थी जिसे हिन्दुस्तानी सिपाहियों को विद्रोह के लिए उकसा कर पूरा किया जा सकता था। गदर पार्टी ने एक पत्र **ऐलाने-जंग** (युद्ध की घोषणा) जारी कर दिया जिसे विदेशों में रहने वाले भारतीयों में बाँटा गया। गदर के कार्यकर्ताओं ने लोगों में प्रोत्साहन जगाने के लिए यात्राएँ भी आरंभ कर दी कि वे हिन्दुस्तान लौट कर संगठित विद्रोह की तैयारी करें। परिणाम बहुत ही उत्साहवर्धक था और भारी संख्या में लोगों ने स्वयं को और अपनी सारी सम्पत्ति को राष्ट्र के नाम समर्पित करने की पेशकश की। इससे उत्साहित होकर गदर पार्टी ने हिन्दुस्तान चलने का आह्वान किया तथा 1914 के पूर्वार्द्ध से क्रांतिकारियों के जत्थे विभिन्न रास्तों से होकर हिन्दुस्तान पहुँचने लगे।

हिन्दुस्तान में प्रवेशाधिकार घुसपैठ के विरुद्ध एक नये अध्यादेश से युक्त होकर हिन्दुस्तानी सरकार ताक लगाए बैठी थी। लौटने वाले प्रवासियों की पूरी तरह जाँच-पड़ताल की गई और लौटने वाले लगभग 8000 में से 5000 को ''सुरक्षित'' मान कर बिना रोक-टोक के आने दिया गया। शेष में से कुछ को गाँवों में नज़रबंद कर दिया गया और काफी लोगों को हिरासत में ले लिया गया। फिर भी कुछ कट्टर कार्यकर्ता पंजाब पहुँचने में सफल हो गए। गदर कार्यकर्ता गाँवों के दौरे करके, पार्टी के पर्चे बाँट कर, मेलों में लोगों को संबोधित करके और अन्य कई प्रयत्नों द्वारा लोगों को विद्रोह के लिए प्रेरित करने लगे। लेकिन 1914 का पंजाब उनकी आशाओं से भिन्न था और लोग गदर द्वारा विद्रोह के लिए तैयार नहीं थे। कार्यकर्ताओं को सरकार के वफादार तत्वों के विरोध का भी सामना करना पड़ा जिसमें खालसा दीवान का प्रमुख भी शामिल था जिसने उन्हें तनखैया या पतित सिखों और अपराधी का दर्जा देकर सरकार द्वारा उन्हें दबाने के प्रयत्नों में पूरा सहयोग दिया।

आम जनता में लोकप्रियता के अभाव से निराश होकर गदर क्रांतिकारियों ने दूसरा प्रयास सिपाहियों में अपना संदेश फैलाकर उन्हें विद्रोह के लिए तैयार करने का किया। नवम्बर 1914 के विद्रोह का प्रयत्न संगठन तथा केंद्रीय नेतृत्व के अभाव के कारण असफल हो गया। फरवरी 1915 में रास बिहारी बोस से सम्पर्क और उन्हें नेतृत्व तथा संगठन सौंप देने के बाद एक अधिक संगठित प्रयत्न किया गया लेकिन यह भी असफल

रहा क्योंकि सरकार ने संगठन में घुसपैठ करके इससे पहले ही कार्रवाई कर ली थी। बोस बच निकलने में सफल हो गए लेकिन अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और गदर आंदोलन को दबा दिया गया।

इसके बाद दमन का जो दौर चला वह बहुत ही भयानक था : 42 लोगों को फाँसी की सजा सुनाई गई और अन्य को लंबी अवधि का कारावास दिया गया। इसके फलस्वरूप पंजाब में राष्ट्रवादी नेतृत्व की एक पूरी पीढ़ी की राजनैतिक हत्या कर दी गई। बर्लिन में रह रहे हिन्दुस्तानी क्रांतिकारियों द्वारा जर्मन सहायता प्राप्त करने और विदेशों में भेजे गए हिन्दुस्तानी सिपाहियों में विद्रोह कराने के प्रयत्न भी असफल हुए। राजा महेन्द्र प्रताप और बर्कातुल्लाह द्वारा अफगानिस्तान के अमीर की मदद प्राप्त करने के प्रयत्नों में भी असफलता हाथ आई। इस प्रकार हिसंक विद्रोह द्वारा अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने में सफलता शायद इन क्रांतिकारियों के भाग्य में लिखी ही नहीं थी।

9.5 उपलब्धियाँ एवं असफलताएँ

इस भाग में गदर आंदोलन की उपलब्धियों और विफलता की चर्चा करेंगे।

उपलब्धियाँ : गदर पार्टी के लोग राष्ट्रीय विचारधारा को लोकप्रिय बनाने में सफल हुए, विशेषकर उपनिवेशवाद के मूल्यांकन करने तथा इस समझ का प्रसार करने में कि हिन्दुस्तान की गरीबी और पिछड़ेपन का मुख्य कारण अंग्रेजी शासन था। यह प्रसार उन्होंने देश तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में किया। उन्होंने अत्यधिक उत्साही राष्ट्रवादियों का एक दल तैयार किया जिसने बाद में कई दशकों तक राष्ट्रीय आंदोलन तथा बाद में पंजाब और देश के अन्य भागों में वामपन्थी तथा किसान आंदोलन तैयार करने में प्रमुख भूमिका अदा की।

गदर विचारधारा मूलतः अत्यंत समतावादी तथा जनतंत्रवादी थी। उनका उद्देश्य था हिन्दुस्तान में एक स्वतंत्र गणतंत्र की स्थापना करना। हरदयाल ने जो प्रारंभिक अवस्था में अराजकतावादी तथा श्रमिक-संघवादी आंदोलनों से प्रभावित हुए थे, इस आंदोलन को एक समतावादी स्वरूप प्रदान किया। वे अक्सर आयरिश, मैक्सिकन तथा रूसी क्रांतिकारियों का जिक्र किया करते थे जिसके कारण इस आंदोलन को अंधे राष्ट्रवाद से भी बचा सकें और उसे एक अन्तर्राष्ट्रीय रूप भी दे सकें। लेकिन गदर आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उसके अधिकतर अनुयायी पंजाबी सिक्ख प्रवासियों में से होने के बावजूद उन्होंने कभी भी फिरकापरस्ती का इज़हार नहीं किया बल्कि वे अपने दृष्टिकोण में पूरी तरह धर्म-निरपेक्ष बने रहे।

कमजोरियाँ : गदर आंदोलन की अपनी कमजोरियाँ भी थी जिनमें मुख्य थी आंदोलन के लिए तैयारी के स्तर को अधिक महत्व देना। कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी सेना की परिस्थितियों को पूरी तरह समझे बिना ही लड़ाई का बिगुल बजा दिया। प्रतिदिन नस्लवादी अपमान, अपरिचित परिस्थितियों में रहने के कारण आई विमुखता की भावना आदि के शिकार भारतीय प्रवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के उनके अभियान का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा क्योंकि उनकी संख्या कम होने के कारण उन्हें संगठित करना बहुत आसान था और इसी से वे भ्रमित हो गए कि सारे भारत की जनता भी इस प्रकार तैयार थी। उन्होंने ब्रिटिश शासकों की ताकत, उनकी विचारधारा के प्रभाव का भी गलत अन्दाज लगाया और समझा कि हिन्दुस्तान की जनता को सिर्फ विद्रोह का नारा देने की जरूरत थी। इस महत्वपूर्ण कमजोरी की जो कीमत गदर आंदोलन और समूचे राष्ट्रीय आंदोलन को चुकानी पड़ी वह काफी अधिक थी क्योंकि अगर गदर आंदोलन के नेतृत्व के एक बड़े भाग को शासन द्वारा कार्यक्षेत्र से अलग न किया जाता तो राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप, विशेषकर पंजाब में, कुछ और ही होता क्योंकि अपनी राष्ट्रवादी एवं धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के कारण गदर दल ने उन फिरकापरस्त भावनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होती जिन्होंने आने वाले वर्षों में अपना सिर उठाया।

बोध प्रश्न 2

1) गदर पार्टी के क्या उद्देश्य थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2) गदर आंदोलन की मुख्य उपलब्धियाँ क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.आर.ए)

असहयोग आंदोलन के यकायक निलंबन और चौरी-चौरा कांड के बाद 1922 के आरंभ में असहयोग आंदोलन के अचानक स्थागित हो जाने से आंदोलन के युवा कार्यकर्ताओं के बीच निराशा और असंतोष की लहर फैल गयी। उनमें से बहुत से गांधी जी के नेतृत्व के प्रभाव से विमुख होने लगे और अहिंसात्मक आंदोलन की मौलिक नीति के विषय में प्रश्न करने लगे। ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए एक बार फिर उन्होंने हिंसा का रास्ता अपनाया। इस संदर्भ में उन्होंने रूस, आयरलैंड, तुर्की, मिस्र और चीन के क्रांतिकारी आंदोलनों से प्रेरणा ली। जब पुराने क्रांतिकारी नेता अपने संगठनों को पुनर्जीवित कर रहे थे उस समय उत्साही-असहयोगियों की श्रेणी से बहुत से नये क्रांतिकारी राष्ट्रवादी उभरने लगे जैसे योगेशचन्द्र चटर्जी, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा, इन सभी ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।

सन् 1922 के बाद क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का विकास दो विस्तृत धाराओं में हुआ : एक तो पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश (पुराने केंद्रीय प्रांतों) और दूसरा बंगाल में। दोनों धाराएँ नये सामाजिक और वैचारिक शक्तियों के प्रभाव में आ गयीं।

- इनमें से एक प्रमुख प्रभाव पूरे भारत में समाजवादी विचारों और संगठनों के विकास का था,
- दूसरा, जुझारू ट्रेड यूनियन आंदोलन का शुरू होना था, और
- तीसरा, 1917 की रूसी क्रांति और सोवियत रिपब्लिक की स्थापना था।

लगभग सभी क्रांतिकारी दल नये समाजवादी राज्य के नेतृत्व से संपर्क विकसित करना और विचारों और संगठन तथा साधनों की सहायता लेना चाहते थे।

उत्तर भारत के क्रांतिकारियों ने सचिन्द्रनाथ सान्याल, जोगेश चटर्जी और राम प्रसाद बिस्मिल्ल के नेतृत्व में अपना पुनर्गठन आरंभ किया। अक्तूबर 1924 में कानपुर में उनकी बैठक हुई और हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (या सेना) (एच. आर. ए.) की स्थापना की गयी। वे सशस्त्र क्रांति द्वारा औपनिवेशिक शासन को समाप्त करके इसकी जगह वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत के संयुक्त राज्यों का संघीय गणतंत्र स्थापित करना चाहते थे।

एच. आर. ए. के लीडरों ने अपने संगठन के प्रचार तथा धन और शस्त्र आदि इकट्ठा करने के उद्देश्य से सरकार के विरुद्ध डकैतियाँ डालने का निश्चय किया। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण काकोरी डकैती कांड था। 9 अगस्त, 1925 में दस क्रांतिकारियों ने लखनऊ के पास छोटे से गाँव के स्टेशन काकोरी में सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली 8 डाउन ट्रेन को रोक लिया और रेलवे का सरकारी धन लूट लिया। सरकार डकैती में शामिल एच. आर. ए. के सदस्यों और नेताओं को बड़ी संख्या में गिरफ्तार करने में सफल हुई। काकोरी षड्यंत्र केस में उन पर मुकद्दमा चलाया गया। कैदियों को जेल में भयंकर यातना दी गयी। इसके विरोध में उन्होंने अनेक बार भूख हड़ताल की। राम प्रसार बिस्मिल्ल, रोशन सिंह और अशफ़ाक-उल्लाह खान और राजेन्द्र लाहरी को फाँसी दी गयी और 17 व्यक्तियों को लंबी अवधि के लिए कारावास की सजा दी गयी।

9.7 हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.एस.आर.ए.)

काकोरी कांड से क्रांतिकारियों को धक्का पहुँचा लेकिन शीघ्र ही युवाओं का एक नया दल इस कमी को पूरा करने के लिए सामने आया। उत्तर प्रदेश में विजयकुमार सिन्हा, शिववर्मा और जयदेव कपूर, पंजाब में भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा और सुखदेव ने चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में एच. आर. ए. का पुनर्गठन आरंभ किया। वे समाजवादी विचारों से भी प्रभावित हुए। अंत में 9 और 10 सितंबर सन् 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में उत्तर भारत के प्रतिनिधि क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की एक बैठक हुई। उन्होंने समाजवाद को अपने लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया और पार्टी का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (आर्मी) (एच. एस. आर. ए.) कर दिया।

एच. एस. आर. ए. का नेतृत्व व्यक्तिगत वीरता के कार्यकलापों से हटकर तेजी से जन-आधारित सशस्त्र संघर्ष के विचारों की ओर बढ़ने लगा। लेकिन जब 30 अक्तूबर, 1928 के दिन लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए महान राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय की लाठियों के क्रूर प्रहार से हत्या हो गयी, तब क्रुद्ध और भावुक युवाओं ने महसूस किया कि इस गंभीर अपमान का बदला लेना आवश्यक है। इसके लिए उन्होंने व्यक्तिगत हत्या की प्रारम्भिक प्रथा का आश्रय लिया और इस तरह 17 दिसंबर, 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु ने लाहौर में पुलिस अफसर साँडर्स की हत्या कर दी। यह अफसर, लाठी प्रहार कांड के लिए उत्तरदायी था।

व्यक्तिगत शौर्य की स्थिति से आगे बढ़ने के लिए एच. एस. आर. ए. के नेताओं ने जनता के बीच अपनी राजनीतिक विचारधारा का प्रचार करने का निश्चय किया, जिससे जन-क्रांतिकारी आंदोलन का संगठन किया जा सके। 8 अप्रैल, 1929 को श्रम विवाद कानून (Trade Disputes Bill) और जन सुरक्षा कानून (Public Safety Bill) और श्रम आन्दोलन के नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में भगत सिंह और बी. के. दत्त को केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंकने के लिए नियुक्त किया गया। जन सुरक्षा कानून (Public Safety Bill) से नागरिक स्वतंत्रता में कमी और विशेषकर श्रमिकों के संगठन बनाने और संघर्ष करने के अधिकार पर रोक लगने वाली थी। बम फेंकने का उद्देश्य हत्या करना नहीं था, क्योंकि बम अपेक्षाकृत अहानिकारक था। जैसा कि बम के साथ फेंके गए पर्चे में कहा गया था, इसका उद्देश्य केवल ''बहरों को सुनने लायक बनाना था''।

भगत सिंह और दत्त ने बच निकलने का कोई प्रयास नहीं किया। वे स्वयं को गिरफ्तार करवाना चाहते थे और अदालत के मुकद्दमे को प्रचार मंच की तरह प्रयोग करना

चाहते थे, जिससे जनता के बीच एच. एस. आर. ए. के कार्यक्रम और विचारधारा का व्यापक प्रचार हो सके। असेम्बली बम कांड में भगत सिंह और वी. के दत्त पर मुकद्दमा चला। पुलिस ने सान्डर्स हत्या कांड से संबंधित सभी विवरणों को उजागर कर दिया। 'लाहौर षड्यंत्र केस' में भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु तथा कई अन्य व्यक्तियों पर मुकद्दमा चला। भगत सिंह और उसके सहयोगियों ने अदालत को प्रचार मंच में बदल दिया। उनके बयान समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए और जनता के बीच चर्चा का विषय बने। अदालत में वे अपने निडर और साहसी व्यवहार से जनता की श्रद्धा के पात्र बने। यहाँ तक कि अहिंसा के समर्थकों ने भी उनके देश प्रेम के कारण उनका सम्मान किया। प्रतिदिन वे ''इंकलाब जिंदाबाद'', ''साम्राज्यवाद का नाश हो'' और ''सर्वहारा वर्ग (श्रमजीवी) अमर रहे'' के नारे लगाते और देशभक्ति के गीत गाते हुए अदालत में प्रवेश करते थे। भगत सिंह का नाम घर-घर में लिया जाने लगा। जेल में भयावह स्थितियों के विरुद्ध वहाँ क्रांतिकारियों ने भूख हड़ताल की। लम्बे समय तक चली भूख हड़ताल से सारा देश आंदोलित हो उठा। उन्होंने माँग की कि उनके साथ साधारण अपराधी की तरह नहीं बल्कि राजनीतिक कैदी की तरह व्यवहार किया जाएँ 13 सितंबर, 1929 में दृढ़ इच्छा शक्ति वाले दुबले-पतले युवा जतिनदास की भूख हड़ताल की वजह से मृत्यु हो गयी। पूरा देश आंदोलित हो उठा। उनके शव को लाहौर से कलकत्ता ले जाने वाली ट्रेन पर ले जाया गया। प्रत्येक स्टेशन पर हजारों व्यक्ति उन्हें श्रद्धांजलि देने आए। कलकत्ता में 6 लाख लोगों के दो मील लंबे जलूस के साथ उनका शव श्मशान तक ले जाया गया। 'लाहौर षड्यंत्र कांड' और इस प्रकार के अन्य कांडों में बहुत से क्रांतिकारियों को अपराधी घोषित करके लंबी अवधि के कारावास की सजा दी गयी। उनमें से बहुतों को अंडमान की सेलुलर जेल में भेज दिया गया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च, 1931 को फाँसी की सजा दी गयी। उनकी फाँसी का समाचार फैलते ही पूरे देश में मौत का सन्नाटा छा गया। करोड़ों व्यक्तियों की आंखें भर आयीं, उन्होंने उपवास रखा, छात्रों ने स्कूलों का बहिष्कार किया तथा दैनिक कार्यों से अलग रहे। भगत सिंह शीघ्र ही संपूर्ण देश के लिए बहादुरी और देशभक्ति की मिसाल बन गए। उनके चित्र घरों और दुकानों की शोभा बढ़ाने लगे। उनकी शहादत को लेकर हजारों गीत लिखे और गाए गए। उनकी लोकप्रियता गांधी जी से स्पर्धा करने लगी।

9.8 उत्तर भारत के क्रांतिकारियों का वैचारिक विकास

एच. आर. ए. और एच. एस. आर. ए. ने अपने कार्यक्रमों के मार्गदर्शन और क्रांतिकारी संघर्ष के लिए एक अग्रगामी सामाजिक विचारधारा विकसित की। इसके अलावा क्रांतिकारी गतिविधियों के लक्ष्य को तथा क्रांतिकारी संघर्ष के रूपों को बेहतर ढंग से परिभाषित किया गया।

9.8.1 हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच. आर. ए.)

वास्तव में पुनर्विचार एच. आर. ए. की आरंभिक अवस्था में ही आरंभ हो गया था। प्रारंभ से ही एच. आर. ए. ने पूर्ण धर्मनिरपेक्ष, प्रजातांत्रिक और समाजवादी ढाँचे के अंदर अपना कार्यक्रम बनाना शुरू कर दिया। 1925 में इसके घोषणा-पत्र में इसका प्रमुख उद्देश्य ''संगठित और सशस्त्र क्रांति द्वारा भारत में संयुक्त राज्यों के संघीय गणतंत्र'' की स्थापना करना घोषित किया गया था। गणतंत्र का मूल सिद्धांत, ''सार्वजनिक मताधिकार की स्थापना और मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण करने वाले सभी रीति-रिवाजों का अंत करना था''। अक्तूबर 1924 में एच. आर. ए. की परिषद की पहली बैठक में ''सामजिक क्रांतिकारी और साम्यवादी सिद्धांतों की शिक्षा देने'' का निश्चय किया गया। मजदूर-किसान संगठन आरंभ करने का भी निश्चय किया गया। रेलवे और बड़े उद्योगों जैसे इस्पात, जहाज निर्माण और खानों के राष्ट्रीयकरण की भी वकालत की गयी।

9.8.2 भगत सिंह और एच. एस. आर. ए.

बिजॉय सिन्हा, शिव वर्मा, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा और भगत सिंह जैसे युवा नेताओं के समाजवाद और मार्क्सवाद की ओर झुकाव से क्रांतिकारी राष्ट्रवादी विचारधारा के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। यह परिवर्तन भगत सिंह के जीवन और विचारों में विशेष रूप से दिखाई पड़ता है। इसका प्रमाण उनके बहुत से पत्रों, कथनों और लेखों में अब उपलब्ध है।

भगत सिंह का जन्म 1907 में प्रसिद्ध देशभक्त परिवार में हुआ था। उनके पिता एक कांग्रेसी थे और चाचा अजीत सिंह प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। भगत सिंह गदर के प्रमुख वीर करतार सिंह सराभा से अत्यधिक प्रभावित थे। भगत सिंह की अध्ययन में विशेष रुचि थी। उन्होंने समाजवाद, सोवियत संघ और विश्व के क्रांतिकारी आंदोलनों से संबंधित साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया था। लाहौर में उन्होंने और सुखदेव ने युवा विद्यार्थियों के लिए अध्ययन मंडलों का संगठन किया। एच. एस. आर. ए. के नेता आपस में गहन राजनीतिक विचार-विमर्श किया करते थे। उन्होंने जेल में भी गहन अध्ययन किया। अन्य नेताओं जैसे– विजॉय सिन्हा, यशपाल, शिव वर्मा और भगवती चरण वोहरा की भी अध्ययन के प्रति विशेष रुचि थी। चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजी कम जानते थे, लेकिन राजनीतिक वाद-विवादों में पूरी तरह भाग लेते थे और विचारों के क्षेत्र में हुए प्रत्येक परिवर्तन की पूरी जानकारी रखते थे।

1929 में अपनी गिरफ्तारी से पहले भगत सिंह विश्वास करने लगे थे कि पूर्णतः जनता पर आधारित लोकप्रिय आंदोलन से ही भारत और मानव जाति को दासता से मुक्त किया जा सकता है। उन्होंने लिखा कि क्रांति केवल ''जनता द्वारा और जनता के लिए'' ही प्राप्त की जा सकती है। इसलिए उन्होंने युवाओं, किसानों और मजदूरों के बीच राजनीतिक कार्य को आगे बढ़ाने के लिए 1926 में *नौजवान भारत सभा* की स्थापना में विशेष रुचि ली। वे इसके संस्थापक सचिव थे। इसकी शाखाएँ गाँवों में खोलने का भी विचार था। भगत सिंह और सुखदेव ने विद्यार्थियों के बीच खुलम-खुल्ला राजनीतिक कार्यों को करने के लिए लाहौर विद्यार्थी परिषद का गठन किया। वास्तव में भगत सिंह ने क्रांति और बम के प्रयोग की विचारधारा को कभी भी एक न समझा।

1929 से 1931 तक भगत सिंह और उनके साथी ने अपने कथनों और घोषणा-पत्र में यह दृढ़तापूर्वक बार-बार दोहराया कि क्रांति का अर्थ जनसाधारण को जागृत करना और जन-आंदोलन का गठन करना है। अपनी फाँसी से पूर्व भगत सिंह ने घोषणा की कि – ''वास्तविक क्रांतिकारी सेना गाँवों और फैक्टरियों में है''। भगत सिंह और उनके साथियों ने क्रांति के अर्थ और कार्यक्षेत्र को भी पुनः परिभाषित किया। क्रांति केवल जुझारूपन या हिंसा का ही नाम नहीं था, इसका पहला उद्देश्य राष्ट्र की मुक्ति था और उसके बाद एक नये समाजवादी समाज का निर्माण था। दिल्ली अदालत में असेम्बली बम कांड के संबंध में दिए गए अपने बयान में उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि उनके लिए क्रांति का अर्थ है ''आमूलचूल परिवर्तन'' और ''इसलिए क्रांति उन लोगों का कर्तव्य भी है जो समाज को समाजवादी आधार पर पुनर्गठित करना चाहते हैं। क्रांति से हमारा तात्पर्य है कि प्रत्यक्ष अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था को बदलना चाहिए''।

9.9 बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवादी

1922 के बाद बंगाल में भी क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के पुनर्गठन का कार्य आरंभ हो गया। उन्होंने प्रेस के माध्यम से बड़े पैमाने पर क्रांतिकारी प्रचार और भूमिगत गतिविधियाँ विकसित की। इसके साथ ही उन्होंने गाँवों से प्रांतीय स्तर तक कांग्रेस संगठन में काम करना जारी रखा। इसकी वजह यह थी कि उन्होंने समझ लिया था कि गांधी जी के

नेतृत्व में कांग्रेस का जनआधार विकसित हुआ है। अतः उनका विचार था कि कांग्रेस के अंदर काम करने से क्रांतिकारी जनता, विशेषकर युवकों से, अपना संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इसके साथ ही कांग्रेस में काम करने से वे छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सक्रिय कार्यकर्त्ता प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। सी. आर. दास ने क्रांतिकारियों और कांग्रेस के बीच अनेक प्रकार से भावनात्मक कड़ी की भूमिका निभायी। उनकी मृत्यु के बाद कांग्रेस का नेतृत्व धीरे-धीरे दो पक्षों में विभाजित हो गया, एक का नेतृत्व सुभाष चन्द्र बोस ने और दूसरे का जे. एम. सेनगुप्ता ने किया। क्रांतिकारी भी विभाजित हो गए। युगान्तर दल ने बोस के गुट को समर्थन दिया जबकि अनुशीलन समिति के लोग सेनगुप्ता के दल के साथ थे।

सन् 1924 तक प्रमुख क्रांतिकारी राष्ट्रवादी, व्यक्तिगत साहसिक गतिविधियों की अपर्याप्तता को समझ चुके थे। उन्होंने सिद्धांततः और योजनाबद्ध रूप में जन जागृति द्वारा सशस्त्र विद्रोह से राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने की नीति स्वीकार की। परंतु व्यावहारिक रूप में वे अब भी छोटे पैमाने की कार्यवाइयों, विशेषकर डकैती और अधिकारियों की हत्या में विश्वास करते थे। जनवरी 1924 में ऐसी ही एक कार्रवाई, गोपीनाथ साहा द्वारा कलकता के कुत्सित पुलिस अधिकारी चार्ल्स टेगर्ट की हत्या का प्रयास था। यद्यपि यह प्रयास विफल हो गया परंतु गोपीनाथ साहा को जनता के विरोध के बावजूद गिरफ्तार किया गया तथा उन पर मुकद्मा चलाया गया। 1924 में उन्हें फाँसी दे दी गयी। अब सरकार सतर्क हो गयी और उसके व्यापक पैमाने पर दमन कार्य शुरू किया। नये घोषित अध्यादेश के अंतर्गत बड़ी संख्या में क्रांतिकारी नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। इसके अतिरिक्त सुभाष चन्द्र बोस सहित बड़ी संख्या में क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति रखने वाले कांग्रेसियों को भी गिरफ्तार किया गया। लगभग सभी प्रमुख नेता जेल में थे, इससे क्रांतिकारी गतिविधियों को बहुत धक्का पहुँचा।

पुराने क्रांतिकारी नेताओं के आपसी झगड़ों के कारण भी क्रांतिकारी गतिविधियों को धक्का पहुँचा। युगान्तर और अनुशीलन के समर्थकों के बीच भी झगड़े थे। 1926 के बाद जेल से छूटने पर पुराने नेताओं के आलोचक बहुत से नये युवा क्रांतिकारियों ने स्वयं को नये विशाल समूहों में पुनर्गठित करना आरंभ किया। ये नये समूह विद्रोह समूह (Revolt Group) के नाम से विख्यात हुए। इन समूहों ने रूसी और आयरिश क्रांतिकारियों के अनुभवों के आधार पर स्वयं को संगठित करने का प्रयास किया। पुराने अनुभवों से शिक्षा लेकर नये विद्रोही समूहों ने अनुशीलन और युगान्तर समितियों के सक्रिय वर्गों के साथ मैत्री संबंध विकसित किए। नये समूहों में चिटगाँव समूह का नेतृत्व सूर्यसेन ने किया। इस समूह ने बहुत प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त की।

9.10 चिटगाँव शस्त्रागार पर छापा

सूर्यसेन ने अनन्त सिंह, गणेश घोष, अम्बिका चक्रवर्ती और लोकनाथ बाबुल जैसे क्रांतिकारी नवयुवकों का विशाल गुट बना लिया। 1929 के प्रारंभ में उन्होंने सशस्त्र विद्रोहियों को संगठित करने की योजना बनायी। यद्यपि यह संगठन छोटे पैमाने का था परन्तु इसका उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि ब्रिटिश शासन को शस्त्रों से चुनौती दी जा सकती है। इस कारण हथियार प्राप्त करने के लिए उन्होंने अनेक जिलों के शस्त्रागारों पर छापा मारने की योजना बनायी। उन्होंने उत्साहपूर्वक प्रचार कार्य आरंभ किया।

पहली कार्यवाई चिटगाँव में होनी निश्चित हुई। उसकी कार्ययोजना को सावधानी से तैयार किया गया। चिटगाँव के दो प्रमुख शस्त्रागारों पर कार्यवाई करना निश्चित हुआ। इसका उद्देश्य क्रांतिकारियों के लिए हथियार प्राप्त करना था। चिटगाँव और बंगाल के

अन्य भागों के बीच टेलीफोन, टेलीग्राम और रेलवे संचार व्यवस्थाएं भंग कर दी गयी। जिन युवा क्रांतिकारियों को शस्त्रागारों के छापे में भाग लेना था, उन्हें चुना गया और सावधानी से उन्हें प्रशिक्षित किया गया। 18 अप्रैल, 1930 को रात के दस बजे कार्रवाई शुरू करने की योजना बनाई गयी। गणेश घोष के नेतृत्व में छः युवकों ने पुलिस शस्त्रागार पर कब्जा किया और ''इन्कलाब जिन्दाबाद'', ''साम्राज्यवाद का नाश हो'', ''गांधी राज्य की स्थापना हो गयी है'' के नारे लगाए। क्रांतिकारियों के दूसरे समूह ने सहायक सेना शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। छापा इंडियन रिपब्लिकन आर्मी चिटगाँव शाखा के नाम पर डाला गया। सभी क्रांतिकारी समूह पुलिस शस्त्रागार के बाहर इकट्ठे हो गए। सूर्यसेन को औपचारिक रूप से प्रांतीय क्रांतिकारी सरकार का अध्यक्ष चुना गया। अंग्रेजी झंडे को नीचे उतार दिया गया और ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' के नारों तथा बंदेमातरम् के घोष के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

चूँकि ब्रिटिश फौज के साथ, जो तुरन्त ही आने वाली थी, लड़ना संभव नहीं था, क्रांतिकारियों ने जलालाबाद पहाड़ी पर मोर्चा जमाया, जहाँ 22 अप्रैल को वे शत्रुसेना के हजारों सिपाहियों से घिर गए। भीषण और वीरोचित लड़ाई के बाद 12 क्रांतिकारी मारे गए। सूर्यसेन ने आमने सामने के युद्ध को छोड़कर आस-पास के गाँवों में रहकर छापामार युद्ध शुरू करने का निश्चय किया। कठोर दमन के बावजूद क्रांतिकारियों को गाँव वालों, जिसमें अधिकांश मुस्लिम थे, के आश्रय और सहायता के कारण लगभग तीन वर्षों तक सुरक्षा मिली। अंत में 16 फरवरी, 1933 को सूर्यसेन को गिरफ्तार कर लिया गया और 12 जनवरी, 1934 को उन्हें फाँसी दे दी गयी।

बंगाल के लोगों पर चिटगाँव शस्त्रागार के छापे का बहुत प्रभाव पड़ा। शस्त्रागार छापे की घटना के परिणामस्वरूप क्रांतिकारी गतिविधियों में पुनः नयी चेतना आयी। केवल मिदनापुर में ही तीन दण्डाधिकारियों की हत्या कर दी गयी। पुलिस के दो इंस्पेक्टर जनरल को मार डाला गया और दो गवर्नरों की हत्या का प्रयास किया गया। सरकार ने दमनकारी रुख अपनाया, लगभग 20 दमनकारी ऐक्ट पारित किए गए। चिटगाँव के अनेक गाँवों को जलाया गया तथा अन्य बहुतों पर जुर्माना लगाया गया। राष्ट्रवादियों की अंधाधुंध गिरफ्तारी हुई।

बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद ने एक नयी अवस्था में प्रवेश किया। इस दौर में बड़ी संख्या में युवतियों ने आन्दोलन में भाग लिया। चिटगाँव शस्त्रागार के छापे से यह भी स्पष्ट हो गया कि बंगाल के पुराने क्रांतिकारियों तथा उत्तर भारत के क्रांतिकारियों के विपरीत बंगाल में नये व्रिदोही दल, सशस्त्र विद्रोह की ओर बढ़ रहे थे। यद्यपि वे सशस्त्र विद्रोह को ठीक प्रकार से संगठित करने में असफल रहे परन्तु उनकी गतिविधियों की दिशा स्पष्ट थी।

9.11 क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन का ह्रास

1930 में क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन का धीरे-धीरे ह्रास होने लगा। ऐसा अनेक कारणों से हुआ। गांधी जी द्वारा निर्देशित राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा हिंसा के विरुद्ध थी परन्तु फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन के बहुत से नेताओं ने युवा क्रांतिकारियों के पराक्रम की प्रशंसा की और अदालत में उनकी पैरवी की तथा उनके विरुद्ध किए गए पुलिस दमन के आदेशों की निंदा की। सरकार की कठोर कार्रवाई से धीरे-धीरे क्रांतिकारी दल कमजोर हो गए। 27 फरवरी, 1931 में इलाहाबाद के सार्वजनिक पार्क में चन्द्रशेखर आजाद की पुलिस मुठभेड़ में मृत्यु हो गयी। वास्तव में इसके साथ ही उत्तर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का पतन हो गया। सूर्यसेन की शहादत के पश्चात् बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन लगभग समाप्त हो गया। जेल या अंडमान में रह रहे क्रांतिकारियों ने अपनी राजनीति के विषय में पुनर्विचार आरंभ किया। बड़ी संख्या में इन्होंने मार्क्सवाद

को अपनाया जैसा कि भगत सिंह और उनके साथियों ने 1920 के दशक में किया था। बहुत से व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी तथा अन्य वामपंथी गुटों में शामिल हो गए। अन्य व्यक्तियों ने कांग्रेस के गांधीवादी दल को अपना लिया।

1920 और 1930 में क्रांतिकारी राष्ट्रवादी, जन-आधारित सशस्त्र संघर्ष के उद्देश्य को पूरा करने में असफल रहे। वे जनता के साथ विशेष संबंध स्थापित करने में भी असफल रहे। फिर भी उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध चल रहे राष्ट्रीय संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके साहस, बलिदान और गहन देशप्रेम ने भारतीय जनता को जागृत किया। विशेष रूप से युवाओं में स्वाभिमान और आत्मविश्वास जगाया। उत्तर भारत में भगत सिंह और उनके सहयोगियों ने समाजवादी विचारों और आंदोलन के बीज बोए।

बोध प्रश्न 3

1) एचआरए और एचएसआरए की विचारधारा और रणनीति की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की मुख्य गतिविधियों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के आंदोलन के पतन के क्या कारण थे?

.....

.....

.....

.....

.....

9.12 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि किस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में क्रांतिकारी प्रवृत्तियाँ उभरीं। अनुशीलन व युगान्तर जैसी क्रांतिकारी समितियाँ प्रारंभिक आंदोलन की महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ थीं। क्रांतिकारी गतिवधियाँ देश के किसी एक भाग तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे देश के बाहर भी प्रकट हुई। गदर पार्टी इसका सर्वप्रथम उदाहरण है। सरकार ने दमनचक्र से इन आंदोलनों को दबा दिया। लेकिन फिर भी ये आंदोलन ब्रिटिश विरोधी चेतना जगाने तथा उसे बढ़ावा देने में सफल हुए। लेकिन उनकी सबसे बड़ी कमजोरी जनता से अलगाव था।

इस इकाई के अंतर्गत आपने 1922 के बाद पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और बंगाल में विकसित हुए क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की दो प्रमुख धाराओं का अध्ययन किया। ऊपर बतलाए गए दोनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी, व्यक्तिगत पराक्रम के कार्यों से हटकर जन-आधारित सशस्त्र संघर्ष की ओर बढ़े। यद्यपि यह आंदोलन जन-आधारित सशस्त्र संघर्ष के अपने उद्देश्य को पूरा करने में असफल रहा, परंतु उस समय के उपनिवेशवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय संघर्ष में इसने महत्वपूर्ण योगदान दिया। क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के साहस, बलिदान और देशभक्ति से भारतीय नवयुवकों को प्रेरणा मिली और उनमें स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास जागृत हुआ।

9.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 9.2.1 देखिए।

2) उपभाग 9.2.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 9.3.1 और 9.3.2 देखिए।

2) भाग 9.5 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 9.6 और 9.7 देखिए।

2) भाग 9.9 देखिए।

3) भाग 9.11 देखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY